REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन

सीमा कुमारी[1] , डॉ. पार्वती यादव[2]
[1]पी.एच.डी. शोधार्थी (शिक्षा) , डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड,कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
[2]सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा विभाग) , डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड,कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

प्रत्येक समाज के कुछ नियम तथा आदर्श होते हैं। जिनका पालन करना समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक माना जाता है । ये नियम तथा आदर्श ही नैतिक मूल्य कहलाते हैं। नैतिक मूल्य व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है। इनमें से एक महत्वपूर्ण पक्ष है सृजनात्मकता प्रस्तुत शोध में उच्चमाध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में बिलासपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के माप हेतु अल्पना सेन गुप्ता एवं अरूण कुमार सिंह द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मापनी का एवं सृजनात्मकता के मापन हेतु वी.के. पासी द्वारा निर्मित Passi Test of Ceratvity का प्रयोग किया गया है आंकड़ो के सांख्यीकीय विश्लेषण के पश्चात् यह पाया गया की विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनके सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना–

मनुष्य एक समाजिक प्राणी है , उसका पूर जीवन समाज में व्यतीत हाता है समाज का अभिन्न होने के कारण उसे समाज के नियमो तथा आदर्शों का पालन करना होता है। इन आदर्शों तथा नियमों को नैतिक मूल्य कहा जाता है । नैतिक मूल्य मानव जीवन के प्रत्येक पल को प्रभावित करते हैं। ये विद्यालयों में नैतिक शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाता है। वास्ताव में शिक्षा के माध्यम से नैतिक मल्यों के बारे में बताया जा सकता है। तथा छात्रों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका पालन करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। नैतिक मूल्य एवं सृजनात्मकता का भी एक विशेष संबध है । नैतिक मूल्य छात्रों के सृजनात्मकता को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। इस बिन्दु पर प्रकाश डालने का प्रयास प्रस्तुत शोध में किया गया है ।

अध्ययन का औचित्य –

वर्तमान समय में नैतिक मूल्य के प्रति आस्था घटने के के कारण समाज में नैतिक संकट की स्थिति उत्पन्न होती जा रही है। यदि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का आभाव निरंतर जारी रहा तो समाज में अराजकता और विद्यटन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। वर्तमान में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का पता लगाना आवश्यक है और यह भी ज्ञात करना आवश्यक है कि नैतिक मल्य विद्यार्थीयों के विभिन्न गुणों को किस प्रकार प्रभावित करता है जैसे– समयोजन , सृजनात्मकता, मानसिक स्वास्थ्य इत्यादि। एक सुखी एवं सफल जीवन हेतु सृजनात्मकता का गुण होना अत्यन्त आवश्यक है छात्रों में सृजनशीलता का गुण उन्हें विद्यालय एवं समाज में सफल होने में सहायता करता है। सृजनात्मकता को नैतिक मूल्य किस प्रकार प्रभावित करती है , यह ज्ञात

करने हेतु प्रस्तुत शोध में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के नैतिक मूल्यों का उनके सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

समस्या कथन –

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन।

प्रस्तुत पदों की कियात्मक परिभाशा–

1. **नैतिक मूल्य** –प्रत्येक व्यक्ति को समाज में रहते हुए समाज के नैतिकता संबंधी नियमों का पालन करना होता है । ये नैतिकता संबंधी नियम नैतिक मूल्य कहलाते हैं।
2. **सृजनात्मकता** – नवीन तथ्यों एवं सिद्वान्तों का प्रतिपादन, सूचना ग्रहण करने तथा कराने की नवीन प्रणालियाँ तथा नवीन विचार की प्रस्तुति सृजनात्मकता कहलाती है ।

अध्ययन का उद्देश्य –

1. उच्च एवं औसत नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन ।
2. उच्च एंव निम्न नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन ।
3. औसत एवं निम्न नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन ।

अध्ययन की परिकल्पना–

1. उच्च एवं औसत नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
2. उच्च एवं निम्न नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।
3. औसत एवं निम्न नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

जनसंख्या एवं न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध में छत्तीसगढ़ के बिलासपुर संभाग के 800 विद्यार्थियों का चयन किया गया है इन 800 विद्यार्थियों में 400 छात्र तथा 400 छात्राएं शामिल हैं।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत शोध में आकड़ों के संकलन हेतु निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. अल्पना सेन गुप्ता एवं अरूण कुमार सिंह द्वारा निर्मित – नैतिक मूल्य मापनी ।
2. वी.के. पासी द्वारा निर्मित Passi Test of Ceratvity

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. मानक त्रुटि विचलन
4. टी – परीक्षण

LBP PUBLICATION

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या –

Ho1–उच्च एवं औसत नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

Variable	Category.	N	Mean	SD	S_{ED}	t-test Value	df	Significance Level	interpretation
Creativity	Good	202	117.99	24.15	2.17	6.40	626	0.05= 1.96	HO -1 Rejected
	Average	426	104.09	28.13				0.01= 2.58	

विश्लेषण–

सारणी क्रमांक –1 से ज्ञात होता है कि– उत्तम और औसत नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकता के आधार पर प्राप्त किये गये मध्यमान क्रमशः 117.99 तथा 104.09 है वहीं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 24.15 तथा 28.13 है । मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जांचने के लिए t–मूल्य परीक्षण किया गया। गणना से प्राप्त t का मान 6.40 है। df =626 के लिए t का सारणी मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.96 एवं 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.59 है। t का प्राप्त मान t के सारणी मान से 0.05 तथा 0.01 दोनों ही सार्थकता स्तरों पर अधिक है। अर्थात उत्तम और औसत नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया।

परिणाम –उत्तम और औसत नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है।

Ho2–उच्च एवं निम्न नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

Variable	Category.	N	Mean	SD	S_{ED}	t-test Value	df	Significance Level	interpretation
Creativity	Good	202	117.99	24.15	2.23	12.19	372	0.05=1.97	HO -2 Rejected
	Poor	172	90.79	19.17				0.01=2.59	

विश्लेषण–

सारणी क्रमांक –2 से ज्ञात होता है कि– उत्तम और निम्न नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकताके आधार पर प्राप्त किये गये मध्यमान क्रमशः 117.99 तथा 90.79 है वहीं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 24.15 तथा 19.17 है। मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जांचने के लिए t–मूल्य परीक्षण किया गया। गणना से प्राप्त t का मान 12.19 है। df = 372के लिए ज का सारणी मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.97 एवं 0.01 के सार्थकता स्तर पर 2.59 है।ज का प्राप्त मान t के सारणी मान से 0.05 तथा 0.01 दोनों ही सार्थकता स्तरों पर अधिक है। अर्थात उत्तम और निम्न नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकतामें सार्थक अंतर पाया गया।

LBP PUBLICATION

परिणाम–उत्तम और निम्न नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है।

Ho3–औसत एवं निम्न नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

Variable	Category.	N	Mean	SD	S_{ED}	t-test Value	df	Significance Level	interpretation
Creativity	Average	426	104.09	28.13	1.99	6.68	596	0.05=1.96	HO -3 Rejected
	Poor	172	90.79	19.17				0.01=2.59	

विश्लेषण–

सारणी क्रमांक –3 से ज्ञात होता है कि– औसत और निम्न नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकता के आधार पर प्राप्त किये गये मध्यमान क्रमशः 104.09 तथा 90.79 है वहीं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 28.13 तथा 19.17 है। मध्यमानों में अंतर की सार्थकता जांचने के लिए t–मूल्य परीक्षण किया गया। गणना से प्राप्त t का मान 6.68 है। df =596के लिए tका सारणी मान 0.05 के सार्थकता स्तर पर 1.96 एवं 0. 01के सार्थकता स्तर पर 2.59 है। t का प्राप्त मान t के सारणी मान से 0.05 तथा 0.01 दोनों ही सार्थकता स्तरों पर अधिक है। अर्थात औसत और निम्न नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया ।

परिणाम–औसत और निम्न नैतिक मूल्य वाले विद्यार्थियों के सृजनात्मकता में सार्थक अंतर है।

उपसंहार–

विद्यार्थी हमारे समाज की नींव होते हैं। विद्यार्थी जीवन में ही बालकों से अच्छे गुणों का विकास कर उन्हें एक अच्छे जीवन की ओर अग्रसर किया जा सकता है तथा स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध के परिणाम से यह स्पष्ट है कि विद्यार्थीयों के नैतिक मूल्य का सृजनात्मकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षकों एवं अभिभावकों के द्वारा विद्यार्थीयों में नैतिक मूल्यों का विकास इस प्रकार किया जाए कि विद्यार्थीयों, समाज तथा विद्यालय में सही ढंग से समायोजित होकर एक स्वस्थ एवं संयमित जीवन की ओर अग्रसित होकर एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ –

- पाण्डेय, आर.एस. (2003), शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो : मेरठ, पेज सं. 340।
- नायक पी.के. एवं दुबे पी. 2016 रिसर्च मेथेडोलॉजी – ए.पी.एच. पब्लिशींग कार्पोरेशन , अन्सारी रोड़ दरियागंज नई दिल्ली।
- नायक पी.के 2018 शिक्षा मनोविज्ञान शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद युनिवर्सिटी।
- डॉ.शर्मा तृष्णा 2008 किशोरों में समायोजन क्षमता शोध प्रकल्प अंक 43 ,वर्ष 13 संख्या 2, पृष्ठ संख्या 31–33।
- जसराज कुवंर 2001 ए. स्टफी ऑफ एडजस्टमेंट एमंग कॉलेज स्टुडेंट , साइको लिगुआ, ISSN , 03771-3132, वाल्यूम – 2 , जुलाई 2012 ,42 (2) पृष्ठ संख्या , 155-157.

- मंगल, एस.के. एवं मंगल,शु. (2017), व्यावहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियाँ, पी एच आई लर्निंग : नई दिल्ली, पेज नं. 244
- सिंह, ए.के. (2015), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास : पटना, पेज नं. 101,217
- शर्मा, वी.पी. (2015), रिसर्च मेथडॉलॉजी, पंचशील प्रकाशन : जयपुर, पेज नं. 450

LBP PUBLICATION